

A New Sentinel for the Seas: INS Mahendragiri Commissioned into the Indian Navy

MDL-Built Stealth Frigate Reinforces India's March Towards Atmanirbharta in Defence

Visakhapatnam, 11 July 2026 — In a landmark moment for India's maritime security and indigenous defence capabilities, INS Mahendragiri, an advanced stealth frigate constructed by Mazagon Dock Shipbuilders Limited (MDL), was formally commissioned into the Indian Navy at Visakhapatnam on Saturday, 11 July 2026. The commissioning ceremony was graced by the Hon'ble Raksha Mantri, Shri Rajnath Singh, marking yet another proud milestone in India's journey towards Atmanirbharta in Defence and the Government of India's vision of building a self-reliant defence ecosystem.

A Flagship of Indigenous Naval Engineering

Designed and built under Project 17A, INS Mahendragiri is the fourth ship of Nilgiri class stealth frigates built by MDL and represents a major leap forward in indigenous naval engineering. The basic design of the ship was developed by the Indian Navy's in-house design organisation, the Warship Design Bureau (WDB), while the detailed design and construction were undertaken by MDL, Mumbai. Every stage of construction was closely supervised by the Warship Overseeing Team (Mumbai), ensuring uncompromising adherence to the most stringent naval standards and quality benchmarks.

Power, Stealth and Combat Superiority

Measuring 149 metres in length and 17.8 metres in breadth, with a displacement of approximately 6,400 tonnes, INS Mahendragiri is powered by a sophisticated Combined Diesel or Gas (CODOG) propulsion system comprising two Gas Turbines and two Main Diesel Engines, enabling the ship to achieve speeds exceeding 28 knots at design displacement. The vessel integrates state-of-the-art stealth technology, advanced weapon systems, modern sensors and highly automated systems that together deliver a decisive edge in combat effectiveness and operational efficiency.

The induction of INS Mahendragiri will substantially augment the Indian Navy's surveillance capabilities, operational reach and maritime security posture across the Indian Ocean Region — reinforcing India's vision of emerging as a strong, secure and technologically advanced maritime nation.

Faster, Smarter, Stronger: A Benchmark in Shipbuilding Efficiency

The construction of INS Mahendragiri stands as a testament to the continuous improvement and enhanced efficiency achieved in the Project 17A shipbuilding programme at MDL. The ship achieved a remarkable **21% reduction in build period** compared to the First-of-Class vessel. Through dedicated efforts and close technical collaboration among MDL, the Indian Navy Team and the Warship Overseeing Team (Mumbai), the ship successfully completed Sea Trials and Final Machinery Trials within just two months of Basin Trials — an exceptional achievement for vessels of this class.

Demonstrating its formidable shipbuilding and delivery capabilities, MDL has delivered **five (05) warships and one (01) submarine** to the Indian Navy within a span of just sixteen (16) months. Key combat systems — including SRGM, AK-630, BrahMos, Kavach, IRL and their associated magazines — achieved full operational readiness prior to delivery through the seamless, coordinated efforts of MDL, the Indian Navy and Original Equipment Manufacturers (OEMs).

Championing Atmanirbhar Bharat and Make in India

The commissioning of INS Mahendragiri reflects MDL's unwavering commitment to the Government of India's flagship initiatives of Atmanirbhar Bharat Abhiyan and Make in India, aimed at achieving self-reliance in defence manufacturing and reducing dependence on foreign technologies. With approximately **75% indigenous content**, the ship stands as a powerful testament to India's growing prowess in indigenous warship design, construction and systems integration.

The project showcases the collective expertise of the Indian Navy, MDL and a robust network of Indian industries — including numerous MSMEs — thereby strengthening the domestic defence industrial ecosystem while promoting innovation, skill development and employment generation. The successful induction of INS Mahendragiri firmly reinforces India's emergence as a leading maritime power with the proven capability to design, build and deliver complex frontline warships through indigenous expertise, innovation and technological excellence.

Issued by Mazagon Dock Shipbuilders Limited (MDL), Mumbai

प्रेस विज्ञप्ति
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल)

समुद्र का नया प्रहरी : आईएनएस महेंद्रगिरि भारतीय नौसेना में शामिल

एमडीएल-निर्मित स्टील्थ फ्रिगेट ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर भारत के बढ़ते कदमों को किया सशक्त

विशाखापत्तनम, 11 जुलाई 2026 - भारत की समुद्री सुरक्षा और स्वदेशी रक्षा क्षमताओं के लिए एक ऐतिहासिक क्षण में, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) द्वारा निर्मित एक उन्नत स्टील्थ फ्रिगेट, **आईएनएस महेंद्रगिरि** को शनिवार, 11 जुलाई 2026 को विशाखापत्तनम में औपचारिक रूप से भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। इस कमीशनिंग समारोह में माननीय रक्षा मंत्री, **श्री राजनाथ सिंह** उपस्थित रहे जो भारत की रक्षा में आत्मनिर्भरता की यात्रा और एक आत्मनिर्भर रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के भारत सरकार के विजन में एक और गौरवपूर्ण मील का पत्थर है।

स्वदेशी नौसेना इंजीनियरिंग का एक प्रमुख जहाज

परियोजना 17ए के तहत डिज़ाइन और निर्मित, आईएनएस महेंद्रगिरि एमडीएल (MDL) द्वारा बनाई गई नीलगिरी क्लास के स्टील्थ फ्रिगेट्स का चौथा जहाज है और यह स्वदेशी नौसेना इंजीनियरिंग में एक बड़ी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। जहाज की बुनियादी डिज़ाइन भारतीय नौसेना के इन-हाउस डिज़ाइन संगठन, 'वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो' (WDB) द्वारा विकसित की गई थी, जबकि विस्तृत डिज़ाइन और निर्माण कार्य एमडीएल, मुंबई द्वारा किया गया। निर्माण के हर चरण की निगरानी 'वॉरशिप ओवरसीइंग टीम (मुंबई)' द्वारा बारीकी से की गई, जिससे नौसेना के सबसे कड़े मानकों और गुणवत्ता बेंचमार्क का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

शक्ति, स्टील्थ और युद्ध में श्रेष्ठता

149 मीटर की लंबाई और 17.8 मीटर की चौड़ाई के साथ, लगभग 6,400 टन के विस्थापन वाली आईएनएस महेंद्रगिरि एक अत्याधुनिक कंबाइंड डीजल या गैस (CODOG) प्रोपल्शन सिस्टम से संचालित है जिसमें दो गैस टर्बाइन और दो मुख्य डीजल इंजन लगे हैं, जो इस जहाज को 28 समुद्री मील से अधिक की गति प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। यह पोत अत्याधुनिक स्टील्थ तकनीक, उन्नत हथियार प्रणालियों, आधुनिक सेंसर और अत्यधिक स्वचालित प्रणालियों को एकीकृत करता है, जो मिलकर युद्ध प्रभावशीलता और परिचालन दक्षता में एक निर्णायक बढ़त प्रदान करते हैं।

आईएनएस महेंद्रगिरि के शामिल होने से हिंद महासागर क्षेत्र में भारतीय नौसेना की निगरानी क्षमताओं, परिचालन पहुंच और समुद्री सुरक्षा स्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि होगी - जो एक मजबूत, सुरक्षित और तकनीकी रूप से उन्नत समुद्री राष्ट्र के रूप में उभरने के भारत के विजन को सुदृढ़ करती है।

अधिक तेज, अधिक स्मार्ट, अधिक मजबूत : जहाज निर्माण दक्षता में एक बेंचमार्क

आईएनएस महेंद्रगिरि का निर्माण एमडीएल में परियोजना 17ए जहाज निर्माण कार्यक्रम के तहत हासिल किए गए निरंतर सुधार और बेहतर दक्षता का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। इस श्रेणी के पहले जहाज की तुलना में इस जहाज के निर्माण की अवधि में **21% की उल्लेखनीय कमी** दर्ज की गई। एमडीएल, भारतीय नौसेना की टीम और वॉरशिप ओवरसीइंग टीम (मुंबई) के समर्पित प्रयासों और करीबी तकनीकी सहयोग के माध्यम से, जहाज

ने बेसिन ट्रायल्स के सिर्फ दो महीने के भीतर ही सी ट्रायल्स और फाइनल मशीनरी ट्रायल्स को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया - जो इस श्रेणी के जहाजों के लिए एक असाधारण उपलब्धि है।

अपनी बेजोड़ जहाज निर्माण और डिलीवरी क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए, एमडीएल ने सिर्फ सोलह (16) महीनों की अवधि के भीतर भारतीय नौसेना को **पांच (05) युद्धपोत और एक (01) पनडुब्बी** सौंपी है। एमडीएल, भारतीय नौसेना और मूल उपकरण निर्माताओं (OEMs) की निर्बाध और समन्वित प्रयासों के माध्यम से, डिलीवरी से पहले ही मुख्य कॉम्बैट सिस्टम - जैसे एसआरजीएम (SRGM), एके-630 (AK-630), ब्रह्मोस (BrahMos), कवच (Kavach), आईआरएल (IRL) और उनसे संबंधित मैगज़ीन - पूरी तरह ऑपरेशनल रूप से तैयार हो गए थे।

आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया को बढ़ावा देना

आईएनएस महेंद्रगिरि का कमीशनिंग समारोह भारत सरकार की प्रमुख पहल आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया के प्रति एमडीएल की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और विदेशी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता को कम करना है। **लगभग 75% स्वदेशी सामग्री** के साथ, यह जहाज स्वदेशी युद्धपोत डिज़ाइन, निर्माण और सिस्टम एकीकरण में भारत की बढ़ती दक्षता का एक सशक्त प्रमाण है।

यह परियोजना भारतीय नौसेना, एमडीएल और कई एमएसएमई (MSMEs) सहित भारतीय उद्योगों के एक मजबूत नेटवर्क की सामूहिक विशेषज्ञता को प्रदर्शित करती है, जो नवाचार, कौशल विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देते हुए घरेलू रक्षा औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करती है। आईएनएस महेंद्रगिरि का सफल समावेश भारत के एक अग्रणी समुद्री शक्ति के रूप में उभरने की पुष्टि करता है, जिसमें स्वदेशी विशेषज्ञता, नवाचार और तकनीकी उत्कृष्टता के माध्यम से जटिल अग्रिम पंक्ति के युद्धपोतों को डिज़ाइन करने, बनाने और वितरित करने की सिद्ध क्षमता है।



